Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2026: 8.739,
https://www.srjis.com/issues_data/291
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL, APRIL-MAY 2026, VOL-14/75

पुरुषत्व अध्ययन: एक सामाजिक-शैक्षिक परिप्रेक्ष्य

संदीप

सहायक प्रवक्ता, राजकीय महिला महाविद्यालय, फरीदाबाद, हरियाणा, एवं शोधार्थी, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Paper Received On: 21 APRIL 2026

Peer Reviewed On: 25 MAY 2026

Published On: 01 JUNE 2026

Abstract

शैक्षिक सामाजिक विमर्श में जेंडर से जुड़े मुद्दों की गहन पड़ताल ने शिक्षा जगत को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। जेंडर विमर्श में महिलाओं को लेकर हुए शोधों और विमर्श ने सामाजिक परिवर्तन और शैक्षिक नीतियों की दिशा में हस्तक्षेपकारी बदलाव किए हैं। प्रसिद्ध नारीवादी चिंतक सिमोन द बोउवार के विचार 'औरतें पैदा नहीं होती अपितु बनाई जाती है' से औरतों के समाजीकरण के विमर्श को समझा जा सकता है । वहीं इस कथन से पुरुष और पुरुषत्व के विमर्श को समझने की भी जरूरत है। लड़कों के समाजीकरण में जहाँ वीरता, हिंसा, साहसी आदि गुणों को समाज द्वारा पोषित किया जाता है । उनकी व्याख्या के रूप मे लड़के रोते नहीं है, उन्हें दर्द नहीं होता, वो बहादुर होते हैं, आदि सामान्यीकृत विचार समाज में हावी होते हैं। पुरुष एवं पुरुषत्व की संकल्पनाओं को यह लेख बारीकी से समझने का आधार प्रदान करता है । पुरुष एवं पुरुषत्व के इकहरे माने जाने वाले स्वरूप को ठुकराते हुए इसके बहुआयामी स्वरूप की आवश्यकता व उदाहरण प्रस्तुत करता है । यह लेख जेंडर समावेशी, संवेदनशील और समानता की दिशा में सामाजिक और शैक्षिक विमर्श में पुरुषत्व अध्ययन की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

परिचय

दैनिक जीवन में जेंडर की उपस्थिति विभिन्न सामाजिक क्रियाओं, प्रक्रियाओं एवं व्यवहारों में होती है। सामाजिक जीवन में इस उपस्थिति का आंतरिकीकरण लंबे ऐतिहासिक काल में हुआ है इसलिए दैनिक जीवन में संबंधों में जेंडर स्वाभाविक नजर आता है। जेंडर संबंध समाज में स्त्रीत्व एवं पुरुषत्व दो विपरीत छोर के रूप में समझे जाते हैं। यह विपरीत छोर की छवि समाज में अत्यंत रूढ़ है। जेंडर संबंधों की इस रूढ़ छवि के कारण लोक व्यवहार भी नियमित और निगमित हैं। इस रूढ़िवादिता के चलते समाज में असमानता स्थापित है। जेंडर संबंधों की यही असमानता स्त्रियों पर पुरुषों की सत्ता एवं वर्चस्व को स्थापित करती है। महिला आंदोलनों एवं स्त्रीवादी संघर्षों के चलते जेंडर संबंधों की इस श्रृंखला में स्त्री उत्पीड़न एवं पुरुष सत्ता को समझने का अवसर दिया जिसके फलस्वरूप असमानता के विभिन्न आयाम समझे गए । जेंडर संबंधों को समझने का यह विमर्श स्त्रीत्व के गठन एवं संरचना को समझाता है। जेंडर संबंधी यह विमर्श सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक असमानता के बारे में समझ बनाता है, वहीं यह विमर्श पुरुषत्व को समझने की दिशा में एक पहल साबित होता है।

Copyright@2026 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सामाजिक सम्बंध, जो स्त्री-पुरुष एवं उससे जुड़े रिश्तों के द्वारा परिभाषित किए जाते हैं; इनके द्वारा सामाजिक माहौल को समझ सकते हैं । परम्परागत रूप से सामाजिक माहौल में इन संबंधों को, हेट्रोसेक्सुअल (इतरलिंगीय) समाज में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों से समझते हैं । स्त्री-पुरुष की भूमिकाएँ संबंधों के समुच्चय के भीतर कल्पित व अभिनीत होती हैं तथा सीखी जाती हैं (दुबे, 2001) । माता-पिता और घर के अन्य का 'वयस्क दृष्टि भाव' समाज के खांचे में लगातार चेतन और अचेतन रूप में शिशु को ढालता है । जब लड़के के रोने पर बार-बार कहा जाता है कि लड़कियों की तरह क्यों रो रहे हो, तो इस भाव में सामाजिक सांस्कृतिक उद्देश्य निहित होते हैं ।

पुरुषत्व का निर्माण जेंडर संबंधों के बीच किस प्रकार निर्मित होता है, इसको समझने के लिए महिला आंदोलनों के इतिहास एवं वर्तमान को जानना अपरिहार्य है। महिला आंदोलनों ने समाज में व्याप्त जेंडर असमानता को उजागर किया, जिसके फलस्वरूप महिलाओं से जुड़े सवालों एवं अधिकारों के मसलों में उभार आया। इस उभार ने स्त्री उत्पीड़न एवं पुरुष वर्चस्व को उजागर किया। नारीवादी लेखन स्त्री पुरुष असमानता एवं पितृसत्ता की सैद्धान्तिकी को विमर्श के पटल पर लेकर आया। नारीवाद और पितृसत्ता जैसी संकल्पनाओं के कारण स्त्री पुरुष मुद्दों को नई दृष्टि से देखा समझा जाना मुमकिन हो पाया। (चक्रवर्ती एंड आर्या, 2021)

जेंडर से जुड़े अध्ययनों में महिलाओं के मुद्दों को मुखरता से उठाया गया है । भारत में साम्राज्यवादी शासन से लेकर स्वाधीन भारत में महिला आन्दोलनों के फलक में महिलाओं के उत्पीडन एवं लैंगिक भेदभाव, श्रम एवं असमान मजदूरी, पितृसत्ता का विरोध , स्त्रियों के खिलाफ हिंसा, न्यायिक सुधार आदि रहे (राधा कुमार, 2014 एवं पांडे, 2018) । जेंडर से जुड़े इन शोध अध्ययनों की चेतना का मुख्य कारण समकालीन महिला आन्दोलन रहे हैं । सार्वजनिक पटल पर जेंडर सम्बन्धी मुद्दों को महिलाओं ने लगातार उभारा, जिसका परिणाम यह हुआ कि इन मुद्दों को लेकर सामाजिक, राजनीतिक एवं अकादमिक जगत में चर्चाएँ बढ़ीं । इन अध्ययनों के विभिन्न आयामों एवं विश्लेषण ने पुरुषत्व को समझने के बिंदु उपलब्ध करवाए ।

जेंडर अध्ययन में पुरुषत्व

पुरुषत्व अध्ययन की मांग एवं आवश्यकता को समझने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि हम इस दिशा में हुए शोधों की रूपरेखा को खंगालें । पुरुषत्व अध्ययनों की वैश्विक एवं भारतीय प्रवृत्ति को समझने पर हम इन शोध कर्मों की दिशा में आगे बढ़ पाएंगे । हमें यह समझने की जरूरत है कि इन शोध अध्ययनों द्वारा पुरुष एवं पुरुषत्व से जुड़ें प्रश्नों एवं समस्याओं का रेखांकन किस प्रकार किया गया । 'हाल के दशकों में जेंडर से जुड़े अध्ययनों में तेजी आई है। इसमें भी पुरुष एवं पुरुषत्व से जुड़े जेंडर अध्ययन शामिल हैं । इन प्रश्नों से जुड़े सरोकारों का विकास सही रूप से समाज विज्ञान, मानविकी, जैविक विज्ञान और दूसरे क्षेत्रों में भी हुआ है। इन शोध सरोकारों का प्रतिबिम्ब पुरुषों एवं लड़कों की अस्मिता, आचार-व्यवहार और उनकी समस्या से लेकर पुरुषों द्वारा की जाने वाली हिंसा से, लड़कों को विद्यालयों में आने वाली परेशानियों से सम्बन्धित लोक सरोकारों से जुड़ा दिखाई पड़ता है (किम्मेल, हेर्न और कॉनेल, 2004) ।

Copyright@2026 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

उपरोक्त विमर्श को हम वैश्विक सन्दर्भ में तो समझ सकते हैं लेकिन भारत के सन्दर्भ में पुरुषत्व से जुड़ें शोध अध्ययनों के परास को सामाजिक विज्ञान के सन्दर्भ में तलाशने पर सीमित शोध कार्य इस विषय पर उपलब्ध हैं। भारतीय संदर्भों में पुरुषत्व से संबंधित शोध अत्यंत सीमित है। दासगुप्ता एवं गोकुलसिंग (2014) अपनी पुस्तक की भूमिका में भारत में पुरुषत्व अध्ययन की चर्चा करते हुए यह कहते हैं कि अधिकतर शोध कार्य शहरी एवं मध्यमवर्गीय विचारों और लेखनों से ओतप्रोत हैं जबकि अन्तर-अनुशासनीय शोध में कुछ विशेष अध्ययन ही देखने को मिलते हैं, जिनमें ओसेला एवं ओसेला (2006), श्रीवास्तव (2023), एल्तेर्नो एवं मित्तापल्ली (2009) शामिल हैं। इसमें हम कुछ अन्य शोध अध्ययनों को भी शामिल कर सकते हैं, जिसमें राधिका चोपड़ा (2003), हरजंत गिल (2012), दीपा श्रीनिवास (2013) के कार्य शामिल हैं।

अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर पुरुषत्व पर आधारित शोध अध्ययन यह दर्शाते हैं कि पुरुषत्व का कोई इकहरा प्रतिरूप (पैटर्न) नहीं है अपितु विभिन्न समुदायों, संस्कृतियों, देशकाल में इसकी निर्मिति विभिन्न रूपों में होती है (कॉनेल, 1993)। 'गार्डियन ऑफ़ फ्लूट' जो कि एक समुदाय में होने वाली प्रथा का उदाहरण देती हैं, होमोसेक्सुअल संबंधों को 'असल पुरुष' बनने में अति आवश्यक माना जाता है। इस तरह विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों में पुरुषत्व निर्माण की बहु-आयामी प्रक्रियाओं के अलग-अलग संदर्भ हो सकते हैं।

हम अपने आस-पास भी देखते हैं तो पुरुषत्व के विभिन्न आयाम मिलते हैं। मोरल (2001) का कहना है कि एक समुदाय के अन्दर भी 'बहु-पुरुषत्व' अस्तित्व पाए जाते हैं, जो नस्ल, वर्ग, आयु, धर्म और भौगोलिक स्थानों (क्षेत्र) को प्रतिबिंबित करते हैं। वहीं चोपड़ा (2003) बताती हैं कि एक ही घर के पुरुषों में आयु, कार्य, स्पेस और वर्ग के अनुसार अलग-अलग व्यक्तिपरकता पाई जाती है।

इस तरह हम कह सकते हैं कि जेंडर की निर्मिति सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भों में होती है। मानवीय व्यवहार में सामाजिक सांस्कृतिक पक्षों के विभिन्न लक्षण देखने को मिलते हैं। यह लक्षण हमारे दैनिक जीवन के हर हिस्से में समाए हुए हैं। हमारे खाने से लेकर खेलने तक, सुबह जागने से लेकर बिस्तर में सोने जाने तक, विभिन्न लोगों, चाहे वे स्त्री हों पुरुष, बच्चे हों या बूढ़े, सभी में ये लक्षण मिलते हैं। उदाहरणतः खेल संबंधी मान्यताओं में स्त्री-पुरुष के लिए समाज में निर्धारित धारणाएं है। जिसके अनुसार स्त्री-पुरुषों की खेल की आदतों में भी सामाजिक विभाजन देखने को मिलता है।

कोनेल द्वारा प्रस्तावित पुरुषत्व के विभिन्न आयामों से यह समझ बनती है कि पुरुषत्व का कोई एक रूढ़ आयाम नहीं है बल्कि पुरुषत्व के बहुल आयाम है। पुरुषत्व के इन बहुल आयामों में देश एवं काल के अनुसार विविधता हो सकती है। पुरुषत्व को बहुवचन में समझने की आवश्यकता है ताकि हम इसकी सूक्ष्मताओं को पहचान सके।

भारतीय सन्दर्भ में अगर बहुल पुरुषत्व की बात करें तो इसके लिए सूक्ष्म शोध अध्ययनों की आवश्यकता है, जिसमें भारतीय समाज मे व्याप्त पुरुषत्व के विभिन्न आयामों को समझाया जा सके। महिला आंदोलनों एवं स्त्री विमर्श ने जहाँ स्त्री असमानता एवं उत्पीड़न को लेकर समझ बनायी। वही पुरुष वर्चस्व जिसके केंद्र में पितृसत्ता रही उसकी सैद्धान्तिकी में पुरुष एवं पुरुषत्व को लेकर समझ का विकास हुआ। जिस तरह नारीवादी शोध एवं विमर्श ने

महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति को उजागर किया उसी तरह भारतीय सन्दर्भों में पुरुषत्व के प्रश्न को गहराई से समझे जाने की आवश्यकता है ।

शैक्षिक परिवेश और पुरुषत्व अध्ययन की संभावनाएं

समाज में स्त्री पुरुष संबंधों को जेंडर के आधारभूत मानकों के दायरों में देखा जा सकता है । समाज में शिशु जन्म लेते ही जेंडर आधारित विभाजनों की असमान संरचनाओं में बड़ा होता है। असमान जेंडर संरचनाओं में बच्चा समाजीकरण के द्वारा उन विभेदों को आत्मसात करते हुए बड़ा होता है जो उसके आसपास होते है। प्राथमिक समाजीकरण से गुजरकर या गुजरते हुए जब लड़के, लड़कियाँ या अन्य सामाजिक पहचानों के साथ विद्यालयों, महाविद्यालयों या विश्वविद्यालयों के औपचारिक शैक्षिक माहौल में पहुँचते हैं तो क्या होता है ?

शिक्षा जो कि सामाजिक प्रक्रियाओं और सांस्कृतिक व्यवहारों से प्रभावित होती है, जिसको शिक्षायी समाजशास्त्री एक तरफ सामाजिक पुनरुत्पादन के रूप के देखते है, वहीं दूसरी और शिक्षा को परिवर्तनकारी उपागम मानते है। पितृसत्तात्मक मान्यताओं के अनुसार लड़कियों को घरेलू बनाए रखने और उनका जल्द से जल्द विवाह जैसे कारक उनकी शिक्षा में बाधा साबित होते हैं। जेंडर समानता के लिए यह जरूरी है की लड़कियों की शैक्षिक एवं सामाजिक स्थिति पर ध्यान दिया जाए। इस क्रम में जेंडर और शिक्षा से जुड़ें शोधों में हम देखते है की विभिन्न शोध पुनरुत्पादन एवं परिवर्तन दोनों पर केंद्रित है। हाल तक, जेंडर और शिक्षा पर अधिकांश नीति, अभ्यास और अनुसंधान लड़कियों और लड़कियों से जुड़ें मुद्दों पर केंद्रित थे (वीवर-हाईटॉवर, 2003)। चूंकि लड़कियों की सामाजिक स्थिति को कमजोर एवं हाशियाकृत माना जाता है तो जेंडर से जुड़ें शोधों में नारीवादी एवं महिला आंदोलनों की चेतना के फलस्वरूप लड़कियों और महिलाओं से जुड़ें सामाजिक एवं शैक्षिक शोध देखने को मिलते है । जेंडर से संबंधित लड़कियों पर होने वाले शोधों ने जहाँ एक तरफ पितृसत्तात्मक संरचनाओं की पोल खोली वहीं दूसरी तरफ पुरुष एवं पुरुष सत्ता के सामाजिक व्यवहार के पहलुओं को समझने का मार्ग प्रशस्त किया । लेख के शुरुआती भाग में यह बताया गया की कैसे वैश्विक स्तर पर पुरुषत्व से जुड़ें शोध समाज विज्ञान एवं उससे जुड़ें विषयों में होने शुरू हुए। पिछले दो या तीन दशक से भारत में भी पुरुषत्व से जुड़ें शोध दिखाई देने लगे । राधिका चोपड़ा (2003) अपने एक लेख में इस बात का जिक्र करती है की दक्षिण एशियाई देश जिसमें भारत भी शामिल हैं, वहाँ पर पुरुषत्व अध्ययन एक मौन क्षेत्र रहा है। हालांकि इस विषय के उभरते कामों ने पुरुष अध्ययन की दिशा में नए शोधों की संभावनाएं पैदा की है ।

जेंडर से संबंधित शैक्षिक शोधों में लड़कियों और महिलाओं से जुड़ें शोधों ने जहाँ नीतिगत एवं जेंडर समावेशी परिवेश की दिशा में पहल की है तो सवाल खड़ा होता है कि पुरुष और पुरुष सत्ता को और गहराई से किस तरह समझा जाए। शैक्षिक परिवेश में पुरुषत्व से जुड़ें शोध जेंडर को किस तरह समझने में सहायता करेंगे ? क्या लड़कों के व्यवहार और कृत्यों को सिर्फ सामाजिक वर्चस्व एवं सत्ता का परिणाम मानकर नकार दिया जाए ? घरेलू हिंसा से लेकर राजनीतिक एवं सामाजिक हिंसा में पुरुषों की उपस्थिति को सामान्य मान लिया जाए ? तो जवाब के तौर पर हम शैक्षिक परिवेश में शिक्षा को जेंडर समानता के हल की तरह देखते है । लेकिन लड़कों और पुरुषों को

समझने के लिए हमें पुरुषत्व एवं शिक्षा के आपसी संबंधों को तलाशना होगा। विद्यालयों को हम जेंडर निरपेक्ष जगह नहीं मान सकते वो सामाजिक-सांस्कृतिक पुनरुत्पादन की जगह के रूप में होते है क्योंकि वो सामाजिक प्रक्रियाओं और व्यवहारों से अछूते नहीं है।

कॉनेल (1996) का मानना है कि जेंडर का निर्माण संस्थागत और सांस्कृतिक संदर्भों में होता है जो पुरुषत्व के कई रूपों को जन्म देता है। पुरुषत्व के निर्माण में विद्यालय सक्रिय खिलाड़ी है। इसलिए पाठ्यचर्या, शिक्षण, अनुशासन और खेल आदि पर पुरुषत्व के प्रभाव और निर्माण को समझना होगा । विद्यालय स्तर पर भी लड़कों और पुरुषत्व के मुद्दों पर शैक्षिक ध्यान बढ़ाने की आवश्यकता है। विद्यालय अगर जेंडर निरपेक्ष जगह नहीं है । समाज द्वारा पोषित व्यवहारों को विद्यालय भी आगे बढ़ाता है । एक तरफ लड़के और लड़कियों की सहशिक्षा वाले विद्यालयों को आशा के रूप में देखा जाता है वही दूसरी तरफ लड़कों के व्यवहार को खतरे के रूप में भी देखा जाता है । इसलिए दोनों के लिए अलग-अलग विद्यालय की मांग की जाती है । विद्यालयों में लड़के और लड़कियों को कक्षा में अलग-अलग बैठाया जाता है । विद्यालय में खेल के मैदान पर लड़कों की सक्रियता को सामान्य माना जाता है । विषयों के चुनाव में भी प्रायः देखा गया है की शारीरिक शिक्षा विषय लड़कों के लिए और गृह विज्ञान विषय लड़कियों के लिए तय मान लिए जाते है । विद्यालय में होने वाले कार्यक्रमों में दीप प्रज्वलन, स्वागत और स्वागत गान को लड़कियों की जिम्मेदारी की तरह देखा जाता है । विद्यालयों में ड्रेस कोड भी बहुत जेंडरीकृत होते है । लड़कों के हिंसक व्यवहार और शक्ति प्रदर्शन को किशोरों की स्वाभाविक प्रवृति मान लिया जाता है । कॉनेल (1996) के अनुसार विद्यालय पुरुषत्व को आकार देने में महत्वपूर्ण खिलाड़ी है। जेंडर के संदर्भ में पुरुषत्व को विद्यालय की संरचनाओं और प्रक्रियाओं में समझने की आवश्यकता है । विद्यालय के माहौल में यह समझने और समझाने की आवश्यकता है की पितृसत्तात्मक समाज लड़कों के लिए भी हानिकारक है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बिन्दु 6.2 में विद्यालयों में जेंडर असमानता को स्वीकार किया है । जेंडर असमानता को दूर करने की गति को अत्यंत धीमा माना है । सिर्फ लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करके जेंडर समानता को स्थापित नहीं किया जा सकता। अपितु हमें लड़कों और पितृसत्तात्मक समाज में प्राप्त उनके विशेषाधिकारों को समझने की आवश्यकता है ताकि जेंडर भेदभावों को समाप्त किया जा सके। इसके लिए पुरुष एवं पुरुषत्व अध्ययन के द्वारा शैक्षिक व्यवस्थाओं को की आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के पैरा 6.8 में लड़कियों और ट्रांसजेंडर विद्यार्थियों को गुणवत्ता पूर्ण एवं न्यायसंगत शिक्षा प्रदान करने की दिशा में 'जेंडर समावेशी कोष' के गठन की बात कही गयी है । जेंडर समावेशी कोष में लड़कों से जुड़ें जेंडर कार्यक्रमों और अनुसंधानों को भी शामिल करने की आवश्यकता है। लड़कों/पुरुषों के जेंडर संवेदीकरण कार्यक्रम न्यायपूर्ण समाज को बनाने में सहायता करेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पाठ्यक्रम सहित उच्चतर शिक्षण संस्थानों के सभी पहलुओं द्वारा संकाय सदस्यों, परामर्शदाताओं और विद्यार्थियों को जेंडर और जेंडर-पहचान के प्रति संवेदनशील और समावेशित करने की बात कही गयी है। शिक्षा नीति में जेंडर संवेदनशीलता और समावेशिता के सवाल को पुरुषत्व अध्ययन के द्वारा और अधिक मजबूत किया जा सकता है ।

Copyright@2026 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

इस प्रकार शैक्षिक परिवेश से जुड़ें पुरुषत्व अध्ययन शिक्षकों को पुरुषत्व से जुड़ें मुद्दों को संबोधित करने के लिए जानकारी एवं व्यावहारिक तरीके प्रदान करेंगे। दूसरा शैक्षिक नीति निर्माताओं और प्रशासकों को शिक्षा से जुड़ी नीतियों एवं पाठ्यचर्या की दिशा में जेंडर समावेशी कार्यक्रम बनाने में मदद करेंगे।

सन्दर्भ:

अल्तेर्नो, एल., एंड मित्तापल्ली, आर. (2009). पोस्ट-कोलोनियल इंडियन फिक्शन इन इंग्लिश एंड मैस्कूलिनिटी.

चोपड़ा, आर. (2003). फ्रॉम वायलेंस टू सपोर्टिव प्रैक्टिस: फैमिली, जेंडर एंड मैस्कूलिनिटीज़. इकोनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली,1650-1657.

कॉनेल, आर. डब्लू. (1993). द बिग पिक्चर: मैस्कूलिनिटीज़ इन रीसेंट वर्ल्ड हिस्ट्री. थ्योरी एंड सोसाइटी,

कॉनेल, आर. डब्लू. (1996). टीचिंग द बॉयज: न्यू रिसर्च ऑन मैस्कूलिनिटीज़ एंड जेंडर स्ट्रेटेजीज फॉर स्कूल. टीचर्स कॉलेज, कोलंबिया यूनिवर्सिटी.

दासगुप्ता, आर. के., एंड गोकुलसिंग, के. ऍम. (Eds.). (2013). मैस्कूलिनिटीज़ एंड इट्स चैल्लेंजिज़ इन इंडिया: एस्सेज ऑन चेंजिंग पर्सेप्संस. McFarland.

दूबे, एल., एंड दूबे, एस. एफ. एल. (2001). एंथ्रोपोलोजिकल एक्स्प्लोरेसंस इन जेंडर: इंटरसेक्टिंग फ़ील्ड्स. सेज पब्लिकेशनस प्राइवेट लिमिटेड.

गिल, एच. एस. (2012). बिकमिंग मैन इन ए मॉडर्न सिटी: मैस्कूलिनिटी, माइग्रेशन एण्ड ग्लोबलाइजेशन इन नॉर्थ इंडिया. अमेरिकन यूनिवर्सिटी.

जैन, एस. (2006). विमेंस एजेंसी इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ़ फैमिली नेटवर्क्स इन इंडियन डायस्पोरा. इकोनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली, 2312-2316.

किम्मेल, एम. एस., हेर्न, जे., एंड कोनेल, आर. डब्लू. (Ed.). (2004). हैंडबुक ऑफ़ स्टडीज़ ऑन मेन एंड मस्कुलिनिटीज़. सेज पब्लिकेशनस

कुमार. आर. (2014). द हिस्ट्री ऑफ़ डूइंग: एन इलस्ट्रेटेड अकाउंट ऑफ़ मूव्मेंट्स फॉर विमेंस राइट्स एंड फेमिनिज्म इन इंडिया, 1800-1990. ज़ुबान.

मोर्रेल, आर. (1998). ऑफ़ बॉयज एंड मैन: मस्कुलिनिटी एंड जेंडर इन साउथर्न अफ़्रीकन स्टडीज. जर्नल ऑफ़ साउथर्न अफ़्रीकन स्टडीज, 24(4), 605-630.

ऑसेला, सी., एण्ड ऑसेला, एफ. (2006). मेन एण्ड मैस्कूलिनिटीज़ इन साउथ इंडिया. एंथम प्रेस.

पांडे, आर. (2018). द हिस्ट्री ऑफ़ फेमिनिज्म एंड डूइंग जेंडर इन इंडिया. रेविस्ता एस्तुडोस फेमिनिस्तास, 26.

श्रीनिवास, डी. (2013). स्कलपटींग द मिडिल क्लास हिस्ट्री: मैस्कूलिनिटी एण्ड द अमर चित्र कथा. रुटलेज.

श्रीवास्तव, एस.(2023). मैस्कूलिनिटी, कन्जूमरिज़्म एण्ड द पोस्ट-नेशनल इंडियन सिटी: स्ट्रीट, नेबरहुडस, होम. कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

चक्रवर्ती, यू., एंड आर्या, एस. (Ed.). (2021). स्त्री अध्ययन: एक परिचय. वाणी प्रकाशन. 456pp.

वीवर-हाईटावर, एम. (2003). द "बॉय टर्न" इन रिसर्च ऑन जेंडर एंड एजुकेशन. रिव्यु ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च,73(4), 471-498.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार, नयी दिल्ली. 8 दिसंबर, 2021 को https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf से प्राप्त किया गया.